कहानी

खून का टीका

- **अन्ना भाऊ साठे**
- **अनुवादकः डॉ. हसन युनुस पठान**

नागू ने चौदह साल काले पानी की भयानक सजा को बारह वर्ष में पूरा किया। दो साल की माफी मिलने के कारण उसकी रिहाई का आदेश हुआ था। पैरों की बेड़ियाँ खुल गयी। दरवाज़े खुल गए और नागू जेल से बाहर निकला। उसने खुली हवा में सांस ली। बारह वर्षों से जेल की सलाखों को देखती उसकी नज़रे बाहर आते ही चारो ओर घूमने लगी। और अचानक वह डर-सा गया।

जेल के सामने एक पेड़ के नीचे एक उग्र चेहरे का बलिष्ठ आदमी बैठा था। नागू को देखते ही वह बाघ की तरह उठ खड़ा हुआ। उसका चौड़ा चेहरा डरावना लग रहा था। उसकी दाढ़ी काफ़ी बढ़ी हुई थी। उसकी आँखें उसकी घनी भौंहों के नीचे अंगारों जैसी लग रही थी। उसने अपने शरीर पर ढीला कुर्ता और नीचे केवल लुंगी पहन रखी थी। उसकी हरकतों में गुस्सा था। लेकिन वह खुद को सम्भाल रहा था। वैसे भी वह निडर दिख रहा था। उसकी बाईं बगल में एक छोटी सी पोटली थी और उसके दाहिने हाथ में एक चौड़ी कुल्हाड़ी का डंडा था। नागू को देखकर उसके होश उड़ गए। उसने एक कदम आगे बढ़ाया।

नागू तो जैसे डर गया। उसका भयानक चेहरा जाना-पहचाना लग रहा था। लेकिन नाम याद नहीं आ रहा था। वह अचानक रुक गया। उसका नाम याद आये इसलिए उसने यादों की तिजोरी खोलने की कोशिश करने का प्रयास किया। लेकिन वो जंग लगे दरवाजे नहीं खुले। वह निराश हो गया। फिर वह घबराकर आगे जाने की बजाय पीछे की ओर भागा। जेल का दरवाज़ा बंद होने लगा। पहरेदार का सिर चकरा गया। उसने नागू की गर्दन पकड़कर आगे की ओर जोर से धक्का दे दी। जिस पहरेदार ने नागू को बारह वर्षों तक कारागार में बंद रखा, आज जब नागू ने वापस अंदर जाने के लिए दरवाजे को छुआ तो क्रोधित होकर बोला,

'पागल हो गये हो क्या?'

'नहीं हवालदार', नागू ने बेबसी से कहा, 'वह आदमी कौन है?'

'वह भिखारी है, राक्षस नहीं। भाग-' ऐसा कहते हुए पहरेदार ने बंदूक का कंधा बदल लिया और एक फिरकी ली। नागू मारा गया। नागू के पास कोई इलाज नहीं था। उसने छुपकर देखा और लगभग भाग गया। फिर जब उसने दूर जाकर देखा तो उसे वही दाढ़ी वाला आदमी हाथ में एक छड़ी लिए एक बाघ को पकड़कर कुलांचे भरता आता दिखाई दिया। अपनी ओर आता देख नागू बहुत ही ज्यादा भयभीत हुआ। उसने वहाँ से जोर की दौड़ लगाई। और 'पुणे-कोल्हापुर' मोटार गाड़ी में दुबक कर बैठ गया, बिल्कुल ड्राइवर की पिछली सीट पर बैठकर उसने राहत की सांस ली।

पुणे-कोल्हापुर इस मजबूत रास्ते पर वह मोटार गाड़ी पूरी गति से चल रही थी। किनारे के पेड़ गाड़ी की ओर आ रहे थे और जल्दी से पीछे की ओर जा रहे थे।

सूर्या प्रत्यस्तमय की ओर चला गया था। हरे-भरे पेड़ लहलहा रहे थे। हाल ही में बारिश बंद हो गयी थी। इससे झाड़ियाँ खिल उठी थीं। यात्री बाहर के सुन्दर दृश्यों को देख रहे थे।

वह मोटर महाराष्ट्र के सीने से सातारा की धरती पर छलांग लगाती हुई दौड़ रही थी। उसकी गति बढ़ा रही थी, लेकिन जैसे ही सह्याद्रि के ऊंचे पर्वतों के पास पहूँची तो वह केवल चींटी के जैसा आभास दे रही थी।

नागू अपने आपको निडर बना रहा था। मैं यूं ही डर गया। लेकिन वह आदमी कौन है? वैसे क्यों उठ खड़ा हुआ था? उसे इससे पहले कहाँ देखा था? ऐसे कई सवाल वो खुद से पूछ रहा था। अनजाने में उसकी गर्दन घूम गयी। आँखों ने धोखा दे दिया। उसने चारो ओर नज़र घुमाई और नागू ने अचानक कुछ शब्द बुदबुदाये, 'धनाजी!' याददाश्त का जंग लगा दरवाज़ा खुलते ही वह नाम उसके होठों से बाहर निकला और वह फिर से डर गया। उसका दिल जोरों से धड़कने लगा। अपनी निर्मम मृत्यु अपने साथ-साथ मोटर गाड़ी में बैठकर सफर कर रहा है यह देखकर वह बेचैन हुआ।

वह आदमी दरवाजे के पास वाली सीट पर आराम से बैठा था। वह हाथ में कुल्हाड़ी का दंडा लेकर बैठा था। और उसकी नजरें नागू पर टिकी हुई थी।

नागू फिर से घबरा गया। उसका मन एक बार फिर विचारों के भंवर में फंस गया। यह अपना दुश्मन है। यह धनाजी रामोशी है। यह अब इंसानों की दुनिया से उठ चुका होगा। इसे शायद अपने खून की प्यास है, तभी यह बारह साल से मेरी राह देख रहा है।

यह बेरडों की संतान क्या कर बैठे, कोई नहीं जानता। इसे कैसे टाला जाए, कैसे बचा जाए, इन विचारों से नागू का दम घुटने लगा। उसकी नजर बार-बार इधर-उधर घूम रही थी और उसका डर बढ़ता जा रहा था। वह खुद पर गुस्सा हुआ और खिड़की से बाहर झांका।

मोटारगाड़ी कराड़ को पीछे छोड़ आगे निकल चुकी थी और उसी गति से इस्लामपुर की ओर जा रही थी। बाहर अंधेरा बहुत घना हो चुका था। ऐसा लग रहा था मानों वह किसी कार के पहिये के नीचे पीस रहा हो। नागू ने मन-ही-मन में कहा, 'मुझे जेल से बाहर नहीं आना चाहिए था, जेल में ही होता तो अच्छा होता। यह पीड़ा तो पीछे नहीं लगी होती।' वह अँधेरे से ऐसे बात कर रहा था जैसे किसी इंसान से बात कर रहा हो।

अचानक मोटर गाड़ी कसेगांव स्टैंड पर रूख गई। चार सवारी उतर गए। 'माटेगांव दो मील यह फलक नागू को दिखा और उसने सोचा कि उसे भी यहीं उतरना चाहिए, लेकिन उसी समय मोटर आगे बढ़ गई और नागू को निराशा हुई। वह शांत रहने की कोशिश करने लगा। लेकिन डर ने उसे शांत बैठने नहीं दिया। विचारों के भूत बेचैन कर उसका सीना चीरने लगे थे। जैसे ही वह एक विचार से मुक्त होता, वह दूसरे विचार में फंस जाता। अब इस्लामपुर आ जायेगा; फिर यह मोटर उस उजाड़ मैदान में एक बरगद के पेड़ के नीचे रुक जायेगी। मुझे वहां उतरना ही होगा। यह धनाजी अवश्य ही उस स्थान पर उतरेगा। फिर वह मुझे दो मील ढालवाड़ी तक नहीं जाने देगा। माँ, बाप, बहन और गाँव वाले किसी से भी मुलाकात नहीं होगी। इतनी दूर आने का कोई मतलब नहीं होगा...

यह सब उस पाप का फल है। वही महापाप जो मुझे गायब कर रहा है। मुझे वह जला रहा है। आग की लपटें मार रही है।

सचमुच, वह महापाप था। मेरी बहन मुझे पसंद आई। भाई-बहन का रिश्ता रेशम की तरह मुलायम और कपुर की तरह नाजुक होता है। लेकिन मुझे उसकी कोई परवाह नहीं थी। वह सुंदर और युवा थी। केले के अंकुर की तरह। उस भयानक रात में वह हाथ जोड़कर 'नहीं, नहीं' कह रही थी। पैर पकड़ रही थी। 'मुझे छोड़ दो' कह कर गिड़गिड़ा रही थी, लेकिन... लेकिन मैंने नहीं सुनी। मुझसे महापाप हो गया। अब यही उसका प्रायश्चित है!

अपनी बहन की सुंदरता और उस कुकर्मों की याद आते ही उसकी आँखें भर गईं। उसने सहज पीछे मुड़कर देखा। और साथ ही, अत्यधिक आतंक से उसका मन कांप उठा। एक क्षण में वह भयभीत हो गया...

लेकिन तुरंत ही उसे इस्लामपुर के पांडू पहलवान की याद आ गयी। पुराना दोस्त उस्ताद इस बार जरूर मदद करेगा। एक रात का ठिकाना देंगा। पांडू दुर्जन नहीं होंगा, ऐसा उसे अहसास हो धीरज मिला। और इस्लामपुर आकर रूख गया। उतरने वालों ने शोर किया। चढ़नेवालों ने दरवाजे के पास भीड़ की। यह मौका देखकर नागू बाहर निकला। और भागा। और पांडू उस्तादा के घर को याद करते हुए दौड़ लगाई।

रास्ते के किनारे पांडू का घर था। थोड़े अंतराल से दूर नगर पालिका की धीमी बत्तियाँ जल रही थीं। सब दरवाज़े बंद थे। चारों ओर निस्तब्धता थी। नागूने पांडू का दरवाज़ा खट-खटाया। वैसे पांडू उस्ताद नाम का एक हड्डी का ढाँचा बाहर निकलकर आया। उसके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं था। केवल लंगोट पहनकर आलस देते हुए जिस्म खुजा रहा था।

'कैसे हो पहलवान?' नागू शुरू हुआ।

और पांडु पिछवाड़ा खजाते हुए कहा, 'मुझे अपनी पहलवानी छोड़े बहुत दिन हो गए हैं। तुम कौन हो? मैंने तुमें पहचाना नहीं।

यह सुनकर नागू अपमानित हुआ। कुछ बोला नहीं। वह सोचने लगा कि क्या कहे। फिर पांडु ने कहा, 'ठीक है, मेरे दिमाग में ही नहीं आ रहा है-'

'आँ! 'हा, मैं वह ढालवाड़ी का नागू चौघुला हूं।' नागू ने बेचैन होते हुए कहा, 'मैं आपके अखाड़े में तैयार हुआ हूँ तब आपका मुझ पर बहुत प्रेम था।'

“हा हा... याद आया। पांडू सर खूजाते बुए बोला, मतलब वो जिसने अपनी बहन के साथ लफड़ा कर के जेल गाया था।”

नागू की आत्मा फिर से जल गई। उसने सिर्फ सिर हा में हिलाया और पांडू ने कहा, 'अच्छा, लेकिन तुम ऐसे आधी रात में क्यों आये हो?'

इस शब्दों से तो नागू की चिंता ओर बढ़ गई. उसने कहा, 'आज ही जेल से रिहा हुआ हूँ। मुझे रात को रुकने के लिए जगह दो।'

‘छाः छाः! इतना मत बोलो!' पांडू ने बनावटी हसी हंसते हुए कहा, 'अभी रात उतनी हुई नहीं है। गौरी के त्योहार के लिए चार लड़कियां आई हैं। अगर उन्हें पता चला कि तुमने बहन के साथ कोई गड़बड़ की थी और मैंने

तुम्हें यहां जगह दी है, तो वे मुझे ही पकड़कर मेरी हजामत कर देंगी। भगवान कसम -' ऐसा कहते हुए उसने अपनी बगल उठाकर उसे खुजलाया, और नागू लगभग रोने लगा।'

'मेरे पीछे वो धनाजी लगा हुआ है,' ऐसा कहकर उसने सामने दीवार की तरफ देखा। दूर से आकर एक विशाल परछाई उस दीवार पर स्थिर खड़ी थी। अब उस परछाई के हाथ में कुल्हाड़ी नजर आ रही थी, उसे देखकर नागू का दिल बैठ गया। वह लड़खड़ाते हुए बोला, 'प...ई. ल. वा. न... द...खो.....'

और वह भयावह परछाई देखकर पांडू भी घबरा गया। उसने कहा, 'घर में घुसो और पिछले दरवाजे से भागो।'

इसे ही एहसान मानकर नागू पांडू के घर में घुसा और पिछले दरवाजे से बाहर निकलकर अंधेरे में भाग गया। उसने कुछ पलों के लिए मौत को चकमा दे दिया था।

ढालवाड़ी शांत हो चुकी थी। दिनभर की मेहनत से थके लोग खर्राटे ले रहे थे। रात गहराती जा रही थी। माहौल घुटनभरा लग रहा था।

रघू चौघुले के घर में बस एक ही दीया जल रहा था। घर के लोग चिंता में डूबे बैठे थे। बरामदे में नागू गंभीर होकर सोच रहा था। रघू दीवार से पीठ टिकाए बैठा था। उसने अपने ऊपर चादर ओढ़ रखी थी। नागू के बचकर आ जाने से खुश होने के बजाय सबको दुख ही हो रहा था। लड़कियां डर गई थीं। और सबकी आंखों के सामने आवडी खड़ी थी। आवडी की याद आते ही बुजुर्ग रो रहा था। वह चुपचाप आंसू बहाते हुए पुराने दिनों को याद कर रहा था और आवडी को देख रहा था।

बारह साल पहले...

रघू चौघुले का घर खुशियों से भरा हुआ था। बड़ी बेटी सारजा नांदगांव में ससुराल में थी। बीच वाला नागू कुश्ती लड़ता था, और सबसे छोटी आवडी जवान हो गई थी। आवडी की सुंदरता और गुण की पूरे गांव में कोई बराबरी नहीं थी। सान्या घर की सबसे चहेती थी, इसलिए चौघुले ने उसका नाम 'आवडी' रखा था। उसके नाक-नक्श इतने तीखे थे कि मानो किसी ने तराशा हो, और जब वह चलती थी तो उसकी एड़ियों के नीचे पत्थर भी चरमराते थे। उसके गालों पर हमेशा मुस्कान रहती थी और रघू को उसके बिना चैन नहीं मिलता था।

फिर बोरगांव का पुलिस पाटिल भगवानराव, रघू के यहां मेहमान बनकर आया। उसने आवडी की सुंदरता देखी और अपने बेटे के लिए उसका हाथ मांग लिया। 'बहू बनाऊंगा तो सिर्फ इसे ही,' पाटिल ने ठान लिया था।

रिश्ता तय हो गया। तारीख पक्की हो गई और आवडी के ऊपर चावल गिराए गए, जिसके बाद वह तुरंत ससुराल चली गई। उस वक्त ढालवाड़ी सुनसान सी लग रही थी। चौघुले उदास हो गया था।

परंतु आवडी तो खुशी में फूली नहीं समा रही थी। वह अपनी सुंदरता, यौवन और ससुराल के वैभव से अभिभूत थी। उसे लग रहा था कि जितना सुख उसे मिला है, उतना किसी और के हिस्से में नहीं हो सकता।

लेकिन चौथे ही दिन उसका भ्रम टूट गया। सुबह-सुबह उसका पति अचानक गिर पड़ा। गुर्राते हुए उसने पैर ऊपर किए और फिर उल्टा होकर मुंह मिट्टी में गाड़ लिया। एक हाथ से उसने बैलगाड़ी की जंजीर को पकड़कर

इतनी जोर से मरोड़ा कि वह टूट गई। फिर उसके दो भाई दौड़े। उन्होंने पानी से भरा लोटा उसके मुंह पर डाला, तब कहीं जाकर उसे होश आया।

यह दृश्य देखकर आवडी स्तब्ध रह गई। वह मुरझा गई और तभी उसकी सास ने कहा, 'बहू, तुम्हारे पति को ऐसे दौरे आते हैं, सावधानी से रहना।'

यह सुनकर आवडी का मन जल उठा। उसे उस वैभव और पाटिल की शान से घिन आने लगी। वह मन ही मन सोचने लगी, 'ये मेरे घर आए, मुझे पसंद किया, जैसे कसौटी पर सोना घिसा जाता है वैसे मुझे परखा। लेकिन इन्होंने मेरी झोली में ये बीमारी डाल दी। अपने दोष छुपाकर इन्होंने मेरा सत्यानाश कर दिया। अब मुझे इसके साथ जिंदगी गुजारनी है और कभी भी इसे दौरा पड़ सकता है।'

आवडी मन ही मन दुखी हो रही थी। वह सोचने लगी कि अपनी खराब किस्मत के साथ इस पति के साथ कैसे जीवन बिताए। वह अपने मायके चली गई। उसने बड़े भाई नागू को यह सब बताया। नागू ने बस सुन लिया और उसे अजीब नजरों से देखा। आवडी को नागू की यह हरकत अजीब लगी। उसका मन और उबल गया।

फिर आवडी ने यह बात अपने माता-पिता को बताई। उसके पिता ने कानों पर हाथ रखते हुए कहा, 'बेटी का जन्म ही ऐसा होता है। उसे ससुराल में या फिर मायके में ही मरना चाहिए। उसके पास मरने की कोई तीसरी जगह नहीं है।'

इस नसीहत ने आवडी को और भी भड़का दिया। वह रोते हुए बोली, 'मेरी किस्मत खराब है, मेरा धोखा हुआ है।' उसकी निराशा गहरी हो गई। वह जैसे श्मशान पर चढ़ाई जा रही हो, वैसे ही वह वापस ससुराल चली गई। वहां वह जलती रही, सुलगती रही, और घुट-घुटकर जीती रही।

उसी समय बोरगांव के धनाजी रामोशी का नाम चारों ओर गूंज रहा था। गांव में उसकी चर्चा बढ़ रही थी। प्रभावशाली लोग धनाजी को सम्मान देते थे। जवान, सुंदर, बलशाली धनाजी को उसकी प्रतिष्ठा शोभा दे रही थी।

हर दिन किसी न किसी संदर्भ में पाटिल के वाड़े में धनाजी का नाम आता था। आवडी उसे सुनती रहती थी, और धनाजी कैसा होगा, उसे एक बार देखना चाहिए, ऐसा उसका मन बार-बार कहता था।

एक दिन बोरगांव का मेला लगा हुआ था। आवडी ने कंगन पहनकर घूमते-घूमते वापस घर जाने का फैसला किया। जैसे ही वह पारे के नीचे आई, चौंक गई। पार के नीचे धनाजी खड़ा था। लंबा कद, मजबूत चेहरा, गठीला शरीर, साफ-सुथरे कपड़े और हाथ में चमचमाती कुल्हाड़ी। यह सब देखकर आवडी विस्मय से उसे देखती रह गई। उसकी गहरी नजरें धनाजी पर टिक गईं। उसी समय धनाजी ने भी उसकी ओर देखा। दोनों की नजरें टकराईं। आवडी घबरा गई और हंसकर सिर झुका लिया और वहां से चली गई। उस दिन के बाद से आवडी को धनाजी का ख्याल सताने लगा। धनाजी भी किसी न किसी बहाने से आता, और जब भी वह आता, आवडी का दिल धड़कने लगता। उसे बस धनाजी की आवाज सुननी थी, उसे देखना था, इसके लिए वह पागल हो गई थी।

वह खिड़की से चोरी-चोरी देखती थी, और जब धनाजी चला जाता तो उसका मन उदास हो जाता। उसे देखने के लिए उसकी आंखें बेचैन हो जातीं, और उसका मन तड़पने लगता। उसकी मनःस्थिति ऐसी हो गई कि उसका स्वभाव बदलने लगा।

और एक दिन आवडी ने गांव को जबरदस्त धक्का दिया। हर कोई हक्का-बक्का रह गया। लोग कहने लगे, 'अब क्या बताएं, यह आवडी रामोशी के घर में चली गई!'

पाटिल की गली तो जैसे पागल हो गई। नौजवान लड़के झोपड़ी बनाकर कुल्हाड़ी नचाने लगे और सिर्फ 'खून-फांसी' की बातें करने लगे। यह खबर ढालवाड़ी तक पहुंची, तो आवडी के माता-पिता ने सिर पीट लिया। आवडी ने एक ही समय पर ससुराल और मायके दोनों से जंग छेड़ दी थी। उसने इन दोनों गांवों में आग लगा दी थी।

बोरगांव बस 'आवडीऽ आवडीऽ' की चर्चा कर रहा था। पाटिल की बहू रामोशी के घर में घुस गई थी, इस बात से गांव को गहरा दुख हुआ था। गांव ने आवडी को खत्म करने की योजना बनाई, लेकिन रामोशियों से लड़ाई करना आसान नहीं था। धनाजी की कुल्हाड़ी और उसके रिश्तेदारों के सामने गांव के लोग कुछ नहीं कर सकते थे। यह सभी जानते थे कि आवडी का धनाजी के साथ रहना उन्हें अच्छा नहीं लगा, लेकिन इसका कोई हल नहीं निकल रहा था। गांव की हालत ऐसी हो गई थी कि 'धरा तो चबाए और छोड़ा तो भागे' जैसी स्थिति बन गई थी।

फिर गांव ने एक तीसरा रास्ता निकाला। सभी समझदार, बोलने वाले और सक्षम लोग इकट्ठा हुए और पंचायत बुलाई गई। पार के नीचे गांव इकट्ठा हुआ, और माहौल देखकर सभी रामोशी एकजुट हो गए थे। अलग-अलग समूह जगह-जगह बैठे हुए थे, बातचीत करने वाले आगे आ रहे थे, और चुप रहने वाले पीछे हट गए थे।

आखिरकार भगवान पाटिल ने शुरुआत की। उन्होंने कहा, 'सुनो भाईयों, हमारा तो बस यही कहना है कि रामोशियों को इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए। उन्हें इस आग में हाथ नहीं डालना चाहिए।'

'तो फिर क्या किया जाए?' धनाजी ने बैठकर सवाल किया।

पाटिल ने कहा, 'तुम आवडी को घर में मत रखो, यह गलत है। आवडी हमारा सम्मान है, हमारी नाक है। वह गांव की इज्जत है और रामोशी का गुनाह है। हम एक छोटी बात के लिए अपनी नाक नहीं कटवा सकते।'

यह सुनकर धनाजी खड़ा हो गया और बोला, 'पाटिल सही कह रहा है। मैं आवडी को घर से निकाल दूंगा, पर तुम उसे अपने घर में लोगे क्या?'

'वह कैसे हो सकता है? नहीं, भाई।' सारी पाटिल गली चिल्लाने लगी। भगवान पाटिल गरजते हुए बोला, 'हम आवडी के साथ जो भी करेंगे, वह हमारी है, हमारी जिम्मेदारी है।'

'सच है,' आवडी का देवर चिल्लाया, 'वह एक दागी बर्तन है। तू उसे निकाल दे, फिर हम उसके साथ जो चाहें करेंगे। जलाएंगे, दफनाएंगे, मार देंगे।'

'खबरदार!' धनाजी गुस्से में आकर बोला, 'जलाने और मारने की बातें मत करो। अगर तुम उसे अपने घर नहीं लोगे, तो उसे मेरे घर में रहने दो।'

'भऽऽला!' बजाजी देशमुख खड़ा हो गया। फिर थोड़ा झुकते हुए एक हाथ कमर पर रखा और कहा, 'आज आवडी तुम्हारे घर आई, कल गांव की सारी औरतें तुम्हारे पास आ जाएंगी, फिर हम क्या करेंगे? क्या चिल्लाएंगे? क्या करें बेवकूफ?' उसने दाहिने हाथ की मुट्ठी उलटकर धीरे से चिल्लाने की आवाज निकाली और अचानक बैठ गया। उस समय पूरा गांव गंभीर हो गया।

"आवडी ईख है-"

"उसे घर में मत रखो-"

"उसे बाहर निकालो-"

"नहीं तो मर जाएगा-"

सारा गाँव चिल्लाने लगा। इस हंगामे से धनाजी को गुस्सा आ गया। भीड़ के शोर पर काबू पाते हुए उसने जोर से कहा,

"मैं तैयार हूँ। मेरी हत्या हो जाने दो, लेकिन जो आवडी पाटील की शान को ठुकराकर मेरे गरीब की झोपड़ी में आई है, वह मेरी देवी है। मैं उसे छोड़ने वाला नहीं हूँ। अगर मैंने उसे निकाल दिया, तो तुम लोग उसे कुत्ते की मौत मारने वाले हो। अब वह आवडी तभी मेरे घर से बाहर जाएगी जब वह मर चुकी होगी। तुम लोग आओ और मुझे मार डालो। नहीं तो मेरी कुल्हाड़ी के नीचे आ जाओ। मैं आवडी को बेइज्जत नहीं करूंगा। उसकी इज्जत के लिए अपनी जान दे दूंगा।"

धनाजी की बातों से मानो गाँव में आग लग गई। जो लोग बोलने की हिम्मत रखते थे, वे भाग गए। सभी ने अपनी चादरें झाड़ीं और पंचायत की बैठक खत्म कर दी। वे कहते हुए चले गए, "रामोशी नहीं मानेगा।" सब अपने-अपने घरों को लौट गए।

आवडी खुशी में डूबी थी। वह गाँव के सामने मानो साँप की तरह इठला रही थी। धनाजी उसे अपने हाथों की हथेली की तरह संजोकर रखता था। उसकी एड़ियों में 16 तोला वजन की पायल छन-छन कर बज रही थी। उन पायलों ने उसकी गोरी पिंडलियों की सुंदरता और भी बढ़ा दी थी। गहनों से लदी, महंगा साड़ी पहने, हरी चूड़ियों से सजी हुई आवडी धनाजी की आँखों से एक पल के लिए भी ओझल नहीं होती थी।

लेकिन आवडी को अपने मायके की याद सता रही थी। वह कमी उसे बहुत खल रही थी। मायके जाने का सुख उसे बहुत प्रिय था, और वह उसके लिए तड़प रही थी। "धनाजी के साथ ही मरना है, पर मायके से कैसे नाता जोड़ूं?" यह सवाल उसे परेशान कर रहा था। अपनी माँ, पिता, भाई और बहनों की याद आते ही वह फूल की तरह मुरझा जाती थी। उसके दिल में आग जल रही थी। वह सोचती थी कि मायके जाए, माँ के गले लगकर खूब रोए, पिता से मिले, बहनों से बात करे। उसकी तड़प बढ़ती जा रही थी, और वह मायके जाने की राह देख रही थी।

फिर गौरी का त्यौहार आया। जो लड़कियाँ ससुराल गई थीं, वे मायके लौट आईं। गाँव की लड़कियाँ टोली बनाकर गौरी के गीत गाने लगीं और आवडी बेचैन हो गई। उसे भी मायके जाने की इच्छा होने लगी। वह इसी बारे में सोचने लगी।

शाम हो चुकी थी। गाँव में लड़कियाँ गौरी के गीत गा रही थीं। "राजस पाखी, जा मेरे मायके-" और यह सुनकर आवडी रो रही थी। वह अंधेरे में खड़ी होकर अपने आँसू पोंछ रही थी। तभी एक चमत्कार हुआ।

नांदगाँव की सारजा आई। उसे देखते ही आवडी ने जोर से रोना शुरू कर दिया। वह अपनी बहन के गले लगकर छोटे बच्चे की तरह रोने लगी। सारजा भी रो पड़ी। धनाजी को अच्छा लगा। बहनें एक-दूसरे से बहुत बातें करने लगीं। फिर सारजा धनाजी से बोली,

"मैं आवडी को नांदगाँव ले जाती हूँ। गौरी का त्यौहार खत्म होते ही आप आकर उसे ले जाना।"

यह सुनकर धनाजी को खुशी हुई। वह बोला, "कृष्णा-कोयना का संगम कोई तोड़ सकता है क्या? आवडी, तुम नांदगाँव चली जाओ। गौरी का त्यौहार खत्म होते ही मैं सुबह आ जाऊँगा।"

आवडी सारजा के साथ नांदगाँव चली गई। उसे लगा कि अब मायके की राह खुल गई है, और वह खुश हो गई।

गौरी का त्यौहार था। आज सुबह से ही आवडी अपनी बहन के घर में खुश होकर घूम रही थी। वह बात कर रही थी, रोटियाँ बना रही थी। अगली सुबह धनाजी आने वाला था, इसलिए वह उत्सुकता से उसकी राह देख रही थी। वह अगले दिन की सुबह का इंतजार कर रही थी, जैसे वह आज की शाम थी।

शाम हो गई। सारजा ने एक थाली में प्रसाद भर लिया। "मैं अपने ससुर को प्रसाद दिखाकर आती हूँ," यह कहकर सारजा आवडी को लेकर खेतों की ओर चल पड़ी। गाँव त्यौहार में मग्न था। लोग रोटियाँ खाकर तृप्ति की डकारें ले रहे थे।

आवडी सारजा के पीछे चल रही थी। उन्होंने काफी दूर तक सफर किया। गाँव बहुत दूर रह गया था। खेत वीरान और सूने लग रहे थे। अंधेरा धीरे-धीरे चारों ओर फैलता जा रहा था। आवडी घबराकर चल रही थी। उसके दिल में डर समा गया था।

एक बाँध पर बड़ा आम का पेड़ खड़ा था। उसके नीचे घना अंधेरा छाया हुआ था। वहीं सारजा रुक गई। तभी अचानक नागू सामने आया। उसके हाथ में चमकती हुई कुल्हाड़ी थी। उसे देखते ही आवडी काँपने लगी। उसने डरकर "अक्का" कहकर सारजा के पीछे छिपने की कोशिश की। फिर उसने सारजा को कसकर पकड़ लिया। उसका शरीर काँप रहा था।

सारजा अचानक निर्दयी हो गई। उसने आवडी को पकड़कर नागू के सामने धकेल दिया और बोली, "मायके का नाम मिट्टी में मिलाने वाली दुष्ट, अब अपने पाप का फल भोग!"

आवडी ने जोर से चीख मारी, लेकिन उसकी आवाज़ गले में ही अटक गई। वह डर से ठिठक गई थी। नागू की कुल्हाड़ी उसकी गर्दन पर चमक रही थी। "नहीं, नहीं, मैं आपके पैरों पड़ती हूँ। मैं कभी आपके सामने नहीं

आऊँगी। मुझे मत मारो, मैं अभी चली जाती हूँ," यह कहकर आवडी नागू के पैरों पर गिर पड़ी। वह पागलों की तरह ज़मीन को छूने लगी। फिर उठी और अपनी बहन के पास जा छिपी। लेकिन फिर सारजा ने उसे दूर धकेल दिया। आवडी ज़मीन पर गिर पड़ी। उसी वक्त नागू ने कुल्हाड़ी का वार कर दिया।

"धऽनाऽजीऽऽ!" आवडी की चीख निकलकर हवा में घुल गई। वह सुंदर, विद्रोही आवडी अब कभी नहीं बोलेगी...

और भोर के समय धनाजी नांदगाँव पहुँच गया। उसने सारजा के दरवाजे पर जाकर आवडी को पुकारा।

सारजा हड़बड़ाते हुए बाहर आई और बेरुखी से कहने लगी, "आवडी तो रात में ही बोरगाँव चली गई।"

धनाजी पर मानो बिजली गिर पड़ी। उसे तुरंत वह भयंकर धोखा समझ में आ गया। उसका दिल टूट गया और वह रोने लगा। उसने आवडी के लिए नई साड़ी और नई चोली सिलवाई थी, लेकिन वहाँ आवडी नहीं थी। यह समझते ही उसका मन टूट गया और वह सीधा पुलिस के पास गया। सरकारी कार्रवाई तुरंत शुरू हो गई। नांदगाँव पुलिस ने घेराबंदी कर दी। पहले ही प्रयास में सारजा घबराकर सच उगलने लगी, "आवडी का खून हुआ है।"

फिर नागू को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया।

उसी दिन धनाजी पागल हो गया। "आवडी-आवडीऽ" कहकर वह चीखने लगा। वह उस नई साड़ी और चोली को अपने सीने से लगाकर तिरस्कार में पागल हो गया...

दिया शांत जल रहा था। रघु चौघुले ने आँसू पोंछते हुए कहा, "क्या पाया तूने? बेटी को कुल के बाहर पाया और फिर उसे मारा। अब तू जीकर क्या करेगा? तुझे देखकर घर के बच्चे खाना नहीं खाएंगे... वे तुझे शैतान समझेंगे..."

उसी समय बच्चे चीखने लगे। एक हंगामा मच गया। लड़कियाँ भागने लगीं और काँपने लगीं। रघु ने चिल्लाकर पूछा,

"क्या हुआ?"

"पानी में भूत" लड़कियाँ चिल्लाईं।

रघु बोला, "भूत नहीं, वह धनाजी है।"

तब नागू उठकर भागने लगा। दिन भाग रहा था, रात भाग रही थी। नागू भाग रहा था और उसके पीछे धनाजी दौड़ रहा था...

आखिरकार, गौरी का त्यौहार फिर आ गया। नागू को आवडी की याद सताने लगी। वह भागता हुआ नांदगाँव के उस इलाके में पहुँच गया जहाँ आवडी नागू के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ा रही थी। वह वहीं गया और आम के पेड़ की ओर देखकर जमीन को छूने लगा। जहाँ आवडी ने अपना सिर टेक दिया था, वहीं अपना सिर झुकाकर नागू बोला, "आवडी, मुझे माफ कर दो, मुझसे गलती हो गई..." और तभी–

तभी धनाजी की विशाल कुल्हाड़ी उसकी गर्दन पर आ गिरी। अंधेरे में चिंगारियाँ सी फूट पड़ीं। काली धरती और काली हो गई। फिर एक बार वह कुल्हाड़ी जमीन पर जा गिरी! 'आवडीऽ' एक लंबी चीख तलवार की तरह रात के अंधेरे को चीरती चली गई और नागू शांत हो गया।

फिर धनाजी ने वह इरकली साड़ी और चोली वहीं बांध पर रख दी। आसमान की ओर देखा और 'आवडीऽ' के नाम की एक जोर की चीख लगाई। वह चीख पूरे खेतों में... सह्याद्री की घाटियों में हमेशा के लिए गूंजती रही।

अनुवादकः- डॉ. हसन युनुस पठान
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, सेन्ट जोसेफ विश्वविद्यालय, बेंगलुरु - 560027
फोन नं. 8050694080, ई-मेलः pathanhasan@sju.edu.in